पुस्तकालय स्वचालन: चुनौतियाँ

Laxmi Singh Tilwar (Research Scholar),
Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh
Dr. Joteshna (Supervisor)
Kalinga University, Raipur, Chhattisgarh

सारांश:

इस पेपर में ऑटोमेशन और लाइब्रेरी ऑटोमेशन शब्द पर चर्चा की गई थी। पुस्तकालय स्वचालन में आज के विभिन्न मुद्दों/चुनौतियों का वर्णन करने का प्रयास, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी संस्थान में पुस्तकालय स्वचालन कार्य/प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। यह पेपर उचित योजना की कमी, धन/आर्थिक संसाधनों की कमी, संसाधनों और प्रौद्योगिकी की कमी, कुशल या प्रशिक्षित कर्मियों/पेशेवरों की कमी और अन्य संबंधित मुद्दों जैसी समस्याओं का पता लगाता है और उनका विश्लेषण करता है। यह पेपर लाइब्रेरी हाउसकीपिंग और सर्विस सेक्टर में उचित लाइब्रेरी ऑटोमेशन कार्यान्वयन के लिए कुछ बिंदुओं/उपायों का संक्षेप में वर्णन करता है।

खोजशब्द:

पुस्तकालय पुस्तकालय स्वचालन, पुस्तकालय और सूचना, आईसीटी, प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटरीकरण।

परिचय:

पठन, अध्ययन और परामर्श के प्रयोजनों के लिए रिकॉर्ड की गई जानकारी का संग्रह, प्रसंस्करण, भंडारण और प्रसार पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों की जिम्मेदारी है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पुस्तकालय द्वारा कई गतिविधियाँ की जाती हैं, जो पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में अनुवादित होती हैं। एक सूचना युग में, पुस्तकालय जैसे सूचना केंद्रों से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का उपयोग करने की अपेक्षा की जाती है ताकि

उपयोगकर्ताओं को अतीत की तुलना में अधिक तेज़ी से और व्यापक रूप से जानकारी प्रदान की जा सके। इस संदर्भ में, पुस्तकालय की दिन-प्रतिदिन की नियमित गतिविधियों का कम्प्यूटरीकरण अपरिहार्य और आवश्यक दोनों है। अन्यथा, पुस्तकालय इलेक्ट्रॉनिक वातावरण में अपना महत्व खो सकते हैं।

पुस्तकालय कई प्रक्रियाओं और कार्यों के साथ जटिल प्रणालियाँ हैं। इन कार्यों (उप-प्रणालियों) में पारंपरिक रूप से सामग्री अधिग्रहण, सूचीकरण और वर्गीकरण, संचलन और इंटरलाइब्रेरी ऋण, सीरियल प्रबंधन और संदर्भ सेवाएं शामिल हैं। हालांकि, सबसे महत्वपूर्ण कार्य उपयोगकर्ताओं को सेवाओं का प्रावधान रहा है। लाइब्रेरियन सदियों से पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य सामग्रियों को प्राप्त करने, सूचीबद्ध करने और वर्गीकृत करने और उन्हें अपने ग्राहकों को वितरित करने के द्वारा दस्तावेज़ गोदामों का प्रबंधन कर रहे हैं। कंप्यूटर और दूरसंचार प्रौद्योगिकियों ने सूचना पेशेवरों की एक नई नस्ल को प्रभावी ढंग से और कुशलता से उपयोगकर्ताओं को वास्तविक जानकारी का चयन, व्यवस्थित, पुनर्प्राप्त और स्थानांतरित (SORT) करने में सक्षम बनाया है। आईसीटी के युग में संग्रह, संगठन और सेवाओं के मामले में पुस्तकालय परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया है। इसके साथ ही, उपयोगकर्ता की मांगें और दृष्टिकोण अपने विभिन्न रूपों में बदल गए हैं। उपयोगकर्ता का सूचना चाहने वाला व्यवहार भी गतिशील रूप से बदल गया है। वे एक ही स्थान पर प्रासंगिक, प्रामाणिक जानकारी तक समय पर पहुँच चाहते हैं। इस अवधारणा ने पुस्तकालय सेवाओं और सूचनाओं को यथाशीघ्र प्रदान करने के मामले में पुस्तकालय पेशेवरों के लिए चुनौतियां प्रस्तुत की हैं। पुस्तकालय क्षेत्र में इस उन्नति ने पुस्तकालय स्वचालन की अवधारणा को जन्म दिया है।

आईसीटी पुस्तकालय सूचना सेवाओं सहित हर क्षेत्र में कई बदलाव ला रहा है। आईसीटी के उपयोग के माध्यम से, हमने हाल के दशकों में दुनिया भर में ऑटोमेशन उद्योगों, पुस्तकालय सूचना नेटवर्क और सेवाओं की स्थापना देखी है। सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग

सूचना सेवाओं के माध्यम से अंतिम उपयोगकर्ताओं को सूचना के बड़े प्रवाह को वितरित करने की अनुमति देता है। सीटी पुस्तकालय सूचना सेवाओं के क्षेत्र में कई बदलावों को लागू करता है, जिसमें पुस्तक अधिग्रहण, कैटलॉगिंग, सीरियल कंट्रोल, वेब-ओपैक, सीएएस और एसडीआई शामिल हैं। साथ ही, पारंपरिक पुस्तकालय को ई-पुस्तकालय या सूचना केंद्र में परिवर्तित करें। पुस्तकालय सूचना अधिकारी भूगोल की परवाह किए बिना प्रभावी पुस्तकालय सूचना सेवाएं प्रदान करते हुए नियमित नौकरियों में पैसा, समय और जनशक्ति बचाते हैं।

पुस्तकालय स्वचालन:

लाइब्रेरी ऑटोमेशन पारंपरिक लाइब्रेरी गतिविधियों जैसे अधिग्रहण, सीरियल कंट्रोल, कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन कंट्रोल आदि के मशीनीकरण की घटना को संदर्भित करता है। "लाइब्रेरी ऑटोमेशन" कंप्यूटर और संबंधित परिधीय मीडिया जैसे चुंबकीय टेप, डिस्क, ऑप्टिकल मीडिया आदि के उपयोग के साथ-साथ सभी प्रकार के पुस्तकालय कार्यों के प्रदर्शन में कंप्यूटर आधारित उत्पादों और सेवाओं के उपयोग को संदर्भित करता है। संचालन। कंप्यूटर ऑपरेशन, कार्य में स्वचालन की एक बड़ी डिग्री पेश करने में सक्षम हैं क्योंकि वे इलेक्ट्रॉनिक हैं, प्रोग्राम करने योग्य हैं और प्रदर्शन की जा रही प्रक्रियाओं पर नियंत्रण रखते हैं"।

लाइब्रेरी ऑटोमेशन, पुस्तकालयों में मैनुअल सिस्टम को बदलने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के उपयोग को संदर्भित करता है।

स्वचालन के लिए समस्याएँ

पुस्तकालय स्वचालन कार्यक्रम के साथ अनेक अन्तर्निहित मुद्दे हैं। मुद्दों को निम्नानुसार संक्षेपित किया जा सकता है।

- स्वचालन कार्यक्रम के लिए प्रारंभिक निवेश पर्याप्त है।

- पुस्तकालय कर्मचारियों को व्यापक स्वचालन प्रशिक्षण से गुजरना चाहिए।
- प्रारंभ में, पेशेवरों को मनोवैज्ञानिक रूप से ट्रैक किया जाता है।
- कार्यक्रम के सफल होने के लिए अन्य संगठनात्मक विभागों को व्यवस्थित होना चाहिए।
- बड़े पुस्तकालयों के लिए पुनरावलोकन में डेटा रूपांतरण।
- आवर्ती खर्चों को प्राधिकरण द्वारा सकारात्मक रूप से अनुमोदित किया जाना चाहिए।
- सॉफ़्टवेयर पैकेज नियमित आधार पर अद्यतन करता है।
- रोजगार पर प्रभाव के बारे में चिंता।
- चिंता है कि प्रौद्योगिकी निषेधात्मक रूप से महंगी होगी।
- पुस्तकालय कर्मचारियों को व्यापक प्रशिक्षण से गुजरना चाहिए।
- प्रबंधन द्वारा समर्थन की कमी बजट की कमी के कारण हो सकती है।
- रेट्रोस्पेक्ट में डेटा रूपांतरण।

निष्कर्ष:

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पुस्तकालय स्वचालन के परिणामस्वरूप वृद्धि हुई है। सबसे पहले, मैनुअल हाउसकीपिंग के काम जैसे कि किताबें और सामग्री उधार लेना और वापस करना त्वरित, सरल और भरोसेमंद हो गया है। एक बटन के क्लिक के साथ लेन-देन की रिपोर्ट बनाना भी सरल और त्वरित है। यह पुस्तकालय के कुशल प्रशासन के साथ-साथ पुस्तकों और अन्य पुस्तकालय सामग्री के सूचीकरण और वितरण में सहायता करता है। यह उधार ली गई किसी भी अतिदेय सामग्री या पुस्तकों का पता लगाना भी आसान बनाता है। हालांकि, किसी भी पुस्तकालय स्वचालन कार्यक्रम की सफलता सावधानीपूर्वक योजना और निष्पादन पर निर्भर है। परिणामस्वरूप, पुस्तकालय पेशेवरों को सही दिशा में आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

संदर्भ:

1. भारद्वाज, आर. और शुक्ला, आर.के., 2001, ए प्रैक्टिकल अप्रोच टू लाइब्रेरी ऑटोमेशन, लाइब्रेरी प्रोग्रेस, 20 (1)।
2. धानी, राम।, (1966)। भारत में पुस्तकालयों में स्वचालन और पुस्तकालय संघों की भूमिका। हेराल्ड ऑफ लाइब्रेरी साइंस, 5, 304-307
3. किम्बर, रिचर्ड.टी., (1968)। पुस्तकालयों में स्वचालन। ऑक्सफोर्ड: पेरगामन प्रेस.64-90
4. कनामाडी, एस. और कुम्भार, बी.डी., 2007, मुंबई में प्रबंधन संस्थान पुस्तकालयों के संसाधनों और सेवाओं पर सूचना प्रौद्योगिकी नवाचारों का प्रभाव: लाइब्रेरियन का दृष्टिकोण, शैक्षणिक और विशेष पुस्तकालय के इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, 8 (1)
5. पी.एस.जी. कुमार, ए स्टूडेंट्स मैनुअल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, बी.आर.पब्लिकेशन, नई दिल्ली
6. सिंह, डी.के. नाज़िम, 2008 CLIBER 2008, इलाहाबाद 28-29 मार्च 2008 में सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना और ज्ञान समाज के युग में पुस्तकालयों की भूमिका का प्रभाव
7. भांजा, एम., और बारिक, एन. (2009)। पुस्तकालय स्वचालन: समस्याएं और संभावनाएं। KIIT विश्वविद्यालय 2009 द्वारा आयोजित MANLIBNET के 10वें राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया गया
8. चोलिन, वी.एस., और प्रकाश, के. (1997, मार्च)। भारत में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के कम्प्यूटरीकरण और नेटवर्किंग की स्थिति। I.T पर INFLIBNET की शिक्षा और अनुसंधान में पुस्तकालयों के स्वचालन के लिए चौथे राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपर। अकादमिक पुस्तकालयों, पटियाला में आवेदन
9. रावल, अजय कुमार एम. (2013): लाइब्रेरी ऑटोमेशन की समस्याएं, वॉल्यूम। 2, अंक: 2, फरवरी 2013

10.संबिघना, स्वदेश रंजन और मालवीय, आर.एन. (2012): भारत में अकादमिक पुस्तकालयों के स्वचालन पर समीक्षा: स्थिति की समस्याएं और भविष्य, सामाजिक विज्ञान और मानविकी में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल वॉल्यूम। नंबर 1, अंक संख्या IV, अप्रैल-जून